Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **14.11.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमें दूसरों से भिन्न नज़र आना चाहिए। ख़ुदा तआला की ज़ात पर ईमान और यक़ीन में में भी हमें दूसरों से भिन्न नज़र आना चाहिए तथा बढ़े हुए होना चाहिए, इबादतों में भी हमें दूसरों से भिन्न नज़र आना चाहिए। उच्च स्तरों को पाने की कोशिश करने वाले भी हम दूसरों की अपेक्षा अधिक होने चाहिएं।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न फ़रमाया-

आज भी मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद की बयान करदा कुछ बातें बयान करूंगा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डालती हैं और इसी प्रकार मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु के अपने जीवन के भी कुछ पहलू स्पष्ट दिखाई देते हैं। मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु अपने विषय में फ़रमाते हैं कि मैं ज्ञान के रूप में बतलाता हूँ कि मैं ने हज़रत साहब अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बाप होने के कारण नहीं माना बल्कि जब मैं लगभग गयारह साल का था तो मैं ने दृढ़ संकल्प किया था कि यदि मेरे अनुसंधान में वे नऊज़ु बिल्लाह झूठे निकले तो मैं घर से निकल जाउंगा परन्तु मैं ने उनकी सत्यता को समझा और मेरा ईमान बढ़ता गया। यहां तक कि जब आप फ़ौत हुए तो मेरा विश्वास और भी बढ़ गया। फिर आपने बताया कि जब मैं ने दस्ती बैअत की तो मेरे विश्वास के दरियाओं के अन्दर दस साल की आयु में ऐसी हरकत पैदा हुई कि जो बयान नहीं की जा सकती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात की ओर कि किस प्रकार वे दुआओं की प्ररणा दिया करते थे, बचपन में ही दुआओं की ओर ध्यान दिलाया करते थे encourage किया करते थे। एक स्थान पर आप बयान फ़रमाते हैं कि- ख़ुदा का दूत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया था कि اجیب کل دعائك الا فی شر کائك। जिससे वादा था कि मैं तेरी दुआएं क़बूल करूंगा उनके अतिरिक्त जो शरीकों के सम्बंध में हों। फ़रमाते हैं कि वे हैनरी मार्टिन कलार्क वाले अभियोग के अवसर पर मुझे, जिसकी आयु केवल नौ वर्ष की थी, दुआ के लिए कहता है अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आपको नौ वर्ष की आयु में दुआ के लिए कहते हैं। घर के नौकरों और नौकरानियों को भी कहते हैं कि दुआएं करो।

अतः जब वह व्यक्ति जिसकी सारी दुआएं क़बूल करने का अल्लाह तआला ने वादा किया हुआ था दूसरों से दुआएं कराना आवश्यक समझता है तो फिर शेष लोगों को कितना इस ओर ध्यान देना चाहिए। यह जो इलहाम है- اجیب کل دعائك الا فی شر کائك इसके बारे में सम्भव है कुछ लोगों को पता न हो, यह एक अभियोग के बारे में आप दुआ कर रहे थे जो आपके शरीकों अर्थात कुछ निकट के लोगों का, उन्होंने किया था। इस पर आपने अपने परिवार वालों को कहा कि अकारण ही वकीलों पर मुक़दमों पर पैसा व्यर्थ में ख़र्च न करो, मुक़दमा हार जाओगे। इसप्रकार नीचे की अदालत में मुक़दमे का निर्णय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भाई के पक्ष में हुआ। फिर दोबारा अपील हुई और चीफ़ कोर्ट में ये मुक़दमा हार गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह कैसे हो सकता है कि ये मुक़दमा जीतते। क्यूंकि अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया था।

दीवार का एक मुक़दमा बड़ा विख्यात मुक़दमा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में लड़ा गया जिसमें आपके विरोधियों ने मस्जिद के रास्ते में दीवार खड़ी कर दी और रास्ता बन्द कर दिया। कुछ अहमदियों को जोश भी आया और उन्होंने दीवार को गिरा देना चाहा परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारा काम संतोष करना तथा क़ानून की पाबन्दी करना है। मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने सपने में देखा कि दीवार गिराई जा रही है और लोग एक एक ईंट को उठाकर फेंक रहे हैं और ऐसा प्रतीत होता ह कि उससे पहले कुछ बारिश भी हो चुकी है। इसी हालत में मैं ने सपने में देखा कि मस्जिद की ओर से ख़लीफ़ः अव्वल पधार रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि जब मुक़दमे का निणय हुआ

और दीवार गिराई गई तो बिल्कुल ऐसा ही हुआ। इस सपने का मैं आपसे पहले वर्णन कर चुका था इस लिए मुझे देखते ही हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने फ़रमाया, मियाँ देखो आज तुम्हारा सपना पूरा हो गया।

बच्चों की दलेरी के बारे में एक स्थान पर अपनी घटना बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि मुझे अपने बचपन की बात याद है कि हमारी वालिदा साहिबा कभी नाराज़ होकर फ़रमाया करतीं कि इसका सिर बहुत छोटा है, अर्थात ख़लीफ़तुल मसीह सानी का। तो मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि यह कोई बात नहीं। असल चीज़ जो हमें चाहिए वह यह है हम अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को समझें, उनपर विचार करें तथा उनकी ज़ात को समझने का प्रयास करें। क़ुरआन करीम को समझें और यही वास्तविकता है जिसके कारण बुद्धि प्रकाशमय होती है। शासन के आज्ञापालन के सम्बंध में आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि जब मैं बच्चा था तथा अभी मैं ने होश ही संभाला था उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़बान से सरकार की वफ़ादारी का आदेश मैं ने सुना तथा इस आदेश पर इतनी पाबन्दी के साथ क़ायम रहा कि मैं ने अपने गहरे दोस्तों का भी इस बारे में विरोध किया, जा आपत्ति करते हैं कि अंग्रेज़ का लगया हुआ पौधा। फ़रमाया इस लिए कि नबियों का दिल बड़ा शुक्रगुज़ार होता है एक छोटी से छोटी बात का भी बड़ा आभार व्यक्त करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें जब दिन रात छपतीं तो इसके बावजूद कि आप कई कई रातें बिल्कुल न सोते थे। फ़रमाते हैं कि मैं कई बार आपको काम करते देखकर सोया और जब कहीं आँख खुली तो काम करते ही देखा यहां तक कि सुबह हो गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा आपके आदर सतकार का कितना ध्यान रखते थे और इसके लिए किसी की भी परवाह नहीं करते थे। मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु अपनी एक घटना बयान करते हैं और यह घटना बयान करके आपने यह ध्यान दिलाया है कि हमारे नौजवानों को याद रखना चाहिए कि इसलामी आचरण तथा नियम होते हैं उनको ओर सदा ध्यान दें। आप अपने एक ख़ुत्बः में बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि नौजवानों को इसलामी आचरण सिखाने की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता। नौजवान शिष्टाचार के बिना एक दूसरे की गर्दन में बाहें डाले, फिर रहे होते हैं। मैं ने देखा है, बचपन में कुछ लोगों की तर्बियत का अब तक मुझ पर प्रभाव है तथा जब वह घटना याद आती है और जब वह घटना याद आती है बरबस उनके लिए दुआ निकलती है। एक बार मैं एक लड़के के कन्धे पर कोहनी रखे खड़ा था कि मास्टर क़ादिर बख़्श साहब ने जो मौलवी अब्दुर्रहीम साहब दर्द के वालिद थे, इससे मना किया और कहा कि यह बहुत बुरी बात है। उस समय मेरी आयु बारह तेरह साल की होगी परन्तु वह नक़शा जब भी मेरे सामने आता है उनके लिए दिल से दुआ निकलती है। इसी प्रकार एक सूबेदार जो मुरादाबाद के रहने वाले थे उनकी एक बात भी मुझे याद है। गुरदासपुर में मुक़दमा था और मैं ने बात करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ''तुम'' कह दिया। वे सूबेदार साहब मुझे अलग ले गए और कहा कि आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे हैं तथा हमारे लिए आदरणीय हैं परन्तु यह बात याद रखें कि ''तुम'' का शब्द बराबर वालों के लिए बोला जाता है, बड़े लोगों के लिए नहीं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए इस शब्द का प्रयोग मैं कदापि सहन नहीं कर सकता। यह पहला पाठ था जो उन्होंने इस विषय में मुझे दिया।

अतः इसलामी शिष्टाचार में हमें भी विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। एक घटना मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि हम भी बचपन में विभिन्न खेलें खेला करते थे। मैं अधिकतर फ़ुटबाल खेला करता था। जब क़ादियान में कुछ ऐसे लोग आए जो क्रिकिट के खिलाड़ी थे तो एक क्रिकिट टीम तैय्यार की। मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु कहते हैं कि एक दिन वे मेरे पास आए और कहने लगे कि जाओ हज़रत साहब से निवेदन करो कि वे भी खेलने के लिए पधारें। अतः मैं अन्दर गया, आप उस समय एक किताब लिख रहे थे। जब मैं ने अपना उद्देश्य बयान किया तो आपने क़लम नीचे रख दी और फ़रमाया कि तुम्हारा गेंद तो ग्राउंड से बाहर नहीं जाएगा लेकिन मै वह क्रिकिट खेल रहा हूँ जिसका गंद दुनिया कि किनारों तक जाएगा। अब देख लो, क्या आपका गेंद दुनिया के किनारों तक पहुंचा है या नहीं। यह वही गेंद है जिसे क़ादियान में बठकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हिट मारी थी जो दुनिया के किनारों तक पहुंच रहा है। फिर एक घटना बयान करते हुए जो आप फ़रमाते हैं कि बिना परिश्रम दीन अथवा दुनियावी सम्मान इंसान प्राप्त नहीं कर सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि हमारे ज़माने में सारा सम्मान ख़ुदा ने हमारे साथ जोड़ दिया है अर्थात अब इस ज़माने में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो ज़माना है इसमें सम्पूर्ण सम्मान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ रख दिया गया है। अतः यदि कोई धर्म से लाभ लेना चाहे तो उसका मार्ग यही है कि स्वंय को ख़ुदा तआला के सम्मुख सम्पूर्ण रूप से डाल दे। परन्तु यदि पूरी क़ौम इस प्रकार करे तो उस पर विशेष फ़ज़्ल होंगे तथा वह हर मैदान में विजय प्राप्त करेगी। हमारी

जमाअत के लिए भी यही क़दम उठाना आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमें दूसरों से भिन्न दिखाई देना चाहिए।ख़ुदा तआला की ज़ात पर ईमान और यक़ीन में भी हमें दूसरों से भिन्न नज़र आना चाहिए बल्कि बढ़े हुए होना चाहिए, इबादतों में भी हमें दूसरों से भिन्न नज़र आना चाहिए। उच्च स्तरों को पाने की कोशिश करने वाले भी हम दूसरों की अपेक्षा अधिक होने चाहिएं। उच्च शिष्टाचार में भी हमें विशेष स्तर प्राप्त होना चाहिए। क़ानून की पाबन्दी में भी हम एक उदाहरण होने चाहिएं अर्थ यह है कि हर एक चीज़ में एक अहमदी को अन्य लोगों से विशिष्ट होने की आवश्यकता है। तभी हम, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं, बैअत से सही लाभ उठा सकते हैं।

एक घटना यह बयान फ़रमाते हैं, एहसान तथा सुन्दर व्यवहार की। एक बार एक सरकारी अफ़सर क़ादियान आए और कहा कि ये लोग आपके शहरी हैं आप इनके साथ नर्मी का व्यवहार करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उन्होंने कहा तो हज़रत साहब ने फ़रमाया कि इस बुडढ़े शाह को पूछो कि क्या कोई एक अवसर भी ऐसा आया है जिससे उसने अपनी ओर से हानिन पहुंचाई हा। जितनी हानि पहुंचाने का प्रयत्न हो सकता है, न किया हो। और फिर इससे ही पूछो कि क्या एक अवसर भी ऐसा आया है कि जिसमें मैं एहसान कर सकता था और फिर मैं ने इसके साथ एहसान न किया हो। बस वह आगे, सिर डाल कर ही बैठा रहा, बोला नहीं कुछ। यह एक भव्य उदाहरण था आपके आचरण का। अतः हमारी जमाअत को भी चाहिए कि वह शिष्टाचार में एक उदाहरण हो। मामलों में ऐसी शुद्धता हो कि एक पैसा भी घर में न हो तो अमानत में हाथ न डालं और बात इतनी मीठी और मुहब्बत से करें कि जो दूसरों के दिल पर असर करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़बान से मैं ने स्वंय यह बातें अपने कानों से कई बार सुनी हैं कि अल्लाह तआला की ओर से दो प्रकार की परीक्षाएं आया करती हैं एक तो वे परीक्षाएं होती हैं जिनमें बन्दे को अधिकार दिया जाता है कि तुम इसे अपनी सुविधानुसार स्वंय कोई ग्रहण कर सकते हो। अतः उसके उदाहरण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- देखो वज़ू भी एक परीक्षा है। सर्दियों के मौसम में जब बड़ी ठंड लग रही हो, ठंडी हवा चल रही हो और तनिक सी हवा लगने से भी इंसान को कठिनाई होती हो।

दूसरे भाग का तो आपने वर्णन नहीं किया, कि दूसरी परीक्षा। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक अवतरण पढ़ देता हूँ जिसमें आपने परीक्षाओं में क्या भेद है इसके विषय में फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि देखो अल्लाह तआला शक्ति रखता था कि अपने बन्दों को किसी प्रकार की कठिनाई न आने देता और हर प्रकार की सुख सुविधाओं में इनका जीवन व्यतीत करवाता। उनका जीवन राजाओं की भांति होता। हर समय उनके लिए भोग विलास का सामान होता। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इसमें बड़े भेद तथा रहस्य विद्यमान होते हैं। देखो माता पिता को अपनी लड़की कैसी प्यारी होती है बल्कि अधिकतर लड़कों की तुलना में अधिक प्यारी होती है परन्तु एक समय आता है कि माता पिता उसको अपने से अलग कर देते हैं। वह समय ऐसा समय होता है कि उस समय को देखना बड़े जिगर वालों का काम होता है। दोनों ओर की स्थिति बड़ी दयनीय होती है (अर्थात माँ बाप भी बिदाई के समय रो रहे होते हैं और लड़की भी) लगभग चौदह पन्द्रह साल एक स्थान में रहते हैं। अन्ततः उनकी जुदाई समय बड़े कष्ट का समय होता है। इस जुदाई को भी नादान व्यक्ति निदर्यता कह दे तो उचित है। परन्तु उसकी लड़की में कई ऐसी शक्तियां होती हैं जिनका इज़हार इस जुदाई तथा ससुराल में जाकर पति के संग रहने में ही उसका परिणाम होता है जो दोनों पक्षों के लिए रहमत और बरकत का कारण बनता है। यही हाल अल्लाह वालों का है। उन लोगों में कई बातें ऐसी छुपी होती हैं कि जब तक उनपर कठिनाइयां तथा कठोरताएं न आवें उनका इज़हार असम्भव होता है। ख़ुदा का निकट सम्बंधी बनने के लिए आवश्यक है कि दुःख सहे जावें और धन्यवाद किया जावे और हर नए दिन एक नई मौत अपने ऊपर लेनी पड़ती है। जब मनुष्य सांसारिक लोभ, हवस तथा मानसिकता के विषय में सम्पूर्ण मौत अपने ऊपर डाल लेता है तब उसे वह जीवन मिलता है जो कभी नष्ट नहीं होता, फिर इसके बाद मरना कभी नहीं होता।

अतः यह है परीक्षा की संक्षिप्त रूप रेखा, हिकमत की। एक बार फ़रमाया हज़रत मुस्लेह मौऊद ने कि जब मेरी आयु नौ या दस वर्ष की थी। मैं तथा एक विद्यार्थी घर में खेल रहे थे। वहीं अलमारी में एक किताब पड़ी हुई थी। उस किताब को जब खाला तो उसमें लिखा था कि अब जिब्राइल नाज़िल नहीं होता। मैं ने कहा यह ग़लत है, मेरे अब्बा पर तो नाज़िल होता है। उस लड़के ने कहा जिब्राईल नहीं आता किताब में लिखा है। हम दोनों में बहस हो गई। अन्ततः हम दोनों हज़रत साहब के पास गए और दोनों ने अपना अपना बयान पेश किया। आपने फ़रमाया किताब में ग़लत लिखा है, जिब्राईल अब भी आता है। फिर अपनी एक घटना बयान करते हैं। कई बार इस घटना को याद करके मैं हंसा भी हूँ और कई बार मेरी आँखों में आँसू भी आ गए परन्तु मैं इसे बड़े आदर की दृष्टि से भी देखता हूँ और वह घटना यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक रात

हम सहन में सो रहे थे। गर्मी का मौसम था कि आकाश पर बादल आया और ज़ोर ज़ोर से गरजने लगा। जिस समय बिजली की कड़क हुई उस समय हम भी, जो सहन में सो रहे थे, उठकर अन्दर चले गए। मुझे आज तक वह दृश्य याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब अन्दर की ओर जाने लगे तो मैं ने अपने दोनों हाथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिर पर रख दिए कि यदि बिजली गिरे तो मुझपर गिरे, उनपर न गिरे। बाद में जग मेरे होश ठिकाने आए तो मुझे अपनी इस हरकत पर हंसी आई कि उनके कारण तो हमने बिजली से बचना था। न यह कि हमारे कारण आप बिजली से सुरक्षित रहते।

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब की वफ़ात की घटना बयान करते हैं कि 1905 ई0 आया, मौलवी अब्दुल करीम साहब बीमार हुए। जिस समय मैं ने आपकी वफ़ात की ख़बर सुनी मुझ में सहन शक्ति न रही। दौड़कर अपने कमरे में घुस गया तथा दरवाज़े बन्द कर लिए। फिर एक बेजान लाश की भांति चारपाई पर गिर गया और मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए। फिर 1908 ई0 का वर्णन, फिर आप फ़रमाते हैं कि मेरे लिए कष्टदायक है वह, मेरे लिए क्या सब अहमदियों के जीवन का नया दौर बनने का कारण बना। उस वर्ष वह हस्ती जो हमारे मृत शरीरों के लिए आत्मा की भांति थी और हमारी बिना ज्योति की आँखों के लिए रोशनी थी और हमारे अंधकारमय दिलों के लिए रोशनी की भांति थी, हम से जुदा हो गए। यह जुदाई न थी, क़यामत थी। पाँव तले से ज़मीन निकल गई और आकाश अपनी जगह से हिल गया। अल्लाह तआला गवाह है उस समय न रोटी का ध्यान था न कपड़े का। केवल एक ही ध्यान था कि यदि सारा संसार भी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को छोड़ दे तो मैं नहीं छोडूंगा तथा फिर इस सिलसिले को दुनिया में स्थापित करूंगा। मैं नहीं जानता कि मैं ने किस हद तक इस अहद को निभाया, परन्तु मेरी नीयत सदा यही रही कि इस अहद के अनुसार मेरे काम हों। आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत को हर व्यक्ति बल्कि बाद में आने वाले भी साक्षी हैं कि आपने इस अहद को ख़ूब निभाया बल्कि हमारे लिए भी अहदों को निभाने के लिए सही रास्तों की ओर मार्ग दर्शन किया आपने। अल्लाह तआला हमें भी अपने अहदों को निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इस समय मैं दो जनाज़े पढ़ाउंगा। एक जनाज़ा हाज़िर है। यह जनाज़ा जो हाज़िर है मकर्रमा सूरय्या बेगम साहिबा अहलिया चौधरी अब्दुर्रहीम साहब मरहूम आफ़ मुलतान का है जो मानचिस्टर यू के में थीं। 11 नवम्बर को वफ़ात हुई उनकी 77 वर्ष की आयु में। इन्ना लिल्लाहि व इन्न इलैहि राजिऊन। नेक सालेह, नमाज़ों की पाबन्द, सुन्दर आचरण वाली, संतोषी तथा शुक्रगुज़ार महिला थीं। अल्लाह तआला इनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए और इनके बच्चों को भी इनकी नेकियों पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। दूसरा जनाज़ा ग़ायब है जो मुकर्रम महमूद अब्दुल्लाह शबोती साहब आफ़ यमन का है। शबोती साहब 9 नवम्बर 2014 को लम्बी बीमार के बाद वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्न इलैहि राजिऊन। यमन में 24 मई 1934 को पैदा हुए। मरहूम के वालिद साहब ने आपको जून 1952 में जामिअः अहमदिय्यः रबवा में पढ़ने के लिए भिजवाया था। 1960 में मुबल्लिग़ बनकर यमन वापस आए। अपने रिश्तेदारों से चाहे वे अहमदी हों या ग़ैर अहमदी, सुन्द व्यवहार करने वाले थे। उनके उत्तराधिकारियों में सैय्यदा नसीम शाह साहिबा के अतिरिक्त पाँच बेटे तथा बारह पोते पोतियां यादगार के रूप में छोड़े हैं। उनके एक बेटे कैनेडा में हैं और नासिर अहमद साहब यहां यू के में ही हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे बुलन्द फ़रमाए और इनके बच्चा को भी इनके पद चिन्हों पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 14.11.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *OfficeAnsarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*